पंचम अध्याय

मंचीयता की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक

पंचम अध्याय

"मंचीयता के दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक"

प्रस्तावना :

'नाटक' विधा साहित्य की समस्त विधाओं में श्रेष्ठ एवं लोकप्रिय विधा है। नाटक काव्य का दृश्य रूप है।नाटक में संगीत, नृत्य, श्रृंगार, वादय यंत्र, सौंदर्य, वातावरण, समाजविज्ञान, इतिहास, माधुर्य, नीति, धर्म, शिक्षा, मनुष्य की समस्याएँ आदि का समन्वय प्राप्त होता है।आचार्य भरत ने नाटक को 'पंचमवेद' कहा है। नाटक मानव की भावात्मक एकता और मनोरंजन का सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

5.1 रंगमंच का अर्थ :

नाटक पढ़ने की नहीं अपितु देखने की विधा है। अत: नाटक को जिस स्थान पर प्रस्तुत किया जाता है उसे 'रंगमंच' कहा जाता है। 'रंगमंच' यह शब्द 'रंग' और 'मंच' इन दो शब्दों के मिलाफ से बना है। 'रंगमंच' का पर्यायी शब्द रंगभूमि, मण्डप है।अंग्रेजी में इसे ही थिएटर कहते हैं। रंगमंच नाटक को जीवन और गति प्राप्त करता है।रंगमंच का अर्थ स्पष्ट करते हुए डॉ.शिवराम माळी लिखते हैं - "रंगभूमि या रंगमंच एक व्यापक शब्द है, जिसके अंतर्गत रंगशाला, काव्य (नाटक), अभिनय प्रयोक्ता, निर्देशक, रंगकर्मी और रंगशिल्प तथा सामाजिक (प्रेक्षक) सभी आ जाते हैं। अपने सीमित अर्थ में 'रंगमंच' रंगशाला का वाचक बनकर रह गया है।"[1] 'रंगमंच' का नाटक प्रस्तुति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी संदर्भ में दशरथ ओझा लिखते हैं - "यह तो स्पष्ट है कि नाटक दृश्यकाव्य है और दृश्यकाव्य में श्राव्य की अपेक्षा कई विशेषताएँ होती हैं।"[2] इसी संदर्भ में रमेश मल्होत्रा लिखते हैं - "नेत्र वह व्यक्त करने में सफलता

---

1. डॉ.शिवराम माळी - नाटक और रंगमंच - पृष्ठ - 194
2. दशरश ओझा - हिंदी नाटक ः उद्‌भव और विकास - पृष्ठ - 32

प्राप्त कराता है, जहाँ वाणी मुक हो जाती है और वाणी वह भाव व्यक्त करती है जिसके लिए नेत्र समर्थ नहीं। नाटक और भावों की भाषा का यह अटूट संबंध है।"[1] रंगमंच का संबंध स्पष्ट करते हुए डॉ.चंदूलाल दुबे लिखते हैं - "रंगमंच से तात्पर्य सिर्फ स्थूल वास्तु से नहीं, रंगमंच से संबंध विविध साधन एवं प्रवृत्तियों से है। रंगमंच का यह सूक्ष्म पक्ष है।"[2] अत: इससे स्पष्ट होता है कि हर नाटक का महत्त्वपूर्ण अंग रंगमंच होता है। समाज की अनेक समस्याओं को दृश्य रूप में स्पष्ट करने का महत्त्वपूर्ण काम रंगमंच करता है। नाटककार अपने नाटक में चित्रित मनुष्य की भावनाओं को चित्रित करता है। लेकिन उन्हीं भावनाओं तथा समस्याओं को दृश्य रूप के माध्यम से दर्शक के सामने प्रस्तुत करने का काम रंगमंच करता है। नाटक लेखन के विकास के साथ-साथ रंगमंच का विकास हुआ है। रंगमंच और नाटक का संबंध अटूट है। पात्रों के बिना रंगमंच की कल्पना निरर्थक मानी जाती है। रंगमंच मानव की सर्जन प्रवृत्ति का क्रीड़ा रूप है।

डॉ.चंदुलाल दुबे जी ने 'रंगमंच' के व्यापक अर्थ का एक भावचित्र दिया है वह निम्न लिखित है - "

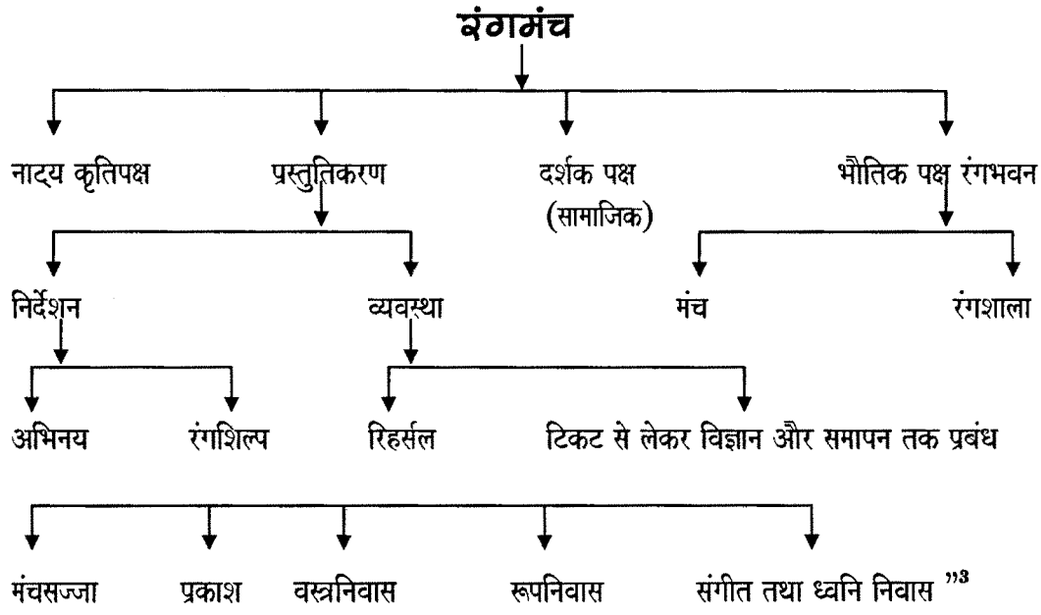

1. रमेश मल्होत्रा - साहित्य का समाजशास्त्र - पृष्ठ - 142
2. डॉ.चंदूलाल दुबे - सैद्धांतिक स्वरूप - पृष्ठ - 84, 85
3. वही - - पृष्ठ - 85

5.2 दृश्य सज्जा :

दृश्य सज्जा के कारण नाटक को अलग महत्त्व प्राप्त होता है। नाटक की किसी कथा को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करना हो तो दृश्य सज्जा का निर्माण किया जाता है। प.ना.परांजपे के अनुसार - "नाटककार द्वारा वर्णित घटनाओं की दृष्टि से अपेक्षित वातावरण निर्माण के लिए मंच पर खड़ा किया गया दृश्यविधान ही दृश्य सज्जा है।"[1] इसी संदर्भ में प्रा यशवंत केळकर लिखते हैं - "दृश्य सज्जा अभिनय का अभिन्न अंग है। जो विविध आकार और अवकाश द्वारा व्यक्त होकर अभिनय का अर्थ प्रक्षेपित करती है।"[2] नेमिशचंद्र जैन दृश्य सज्जा का महत्त्व स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - "नाटक के एक संतुलित और प्रभावोत्पादक आवश्यक परिवेश के रूप में दृश्य सज्जा आधुनिक नाटक का महत्त्वपूर्ण और अत्यान्तिक अंग है।"[3] निष्कर्षत: स्पष्ट है कि नाटक में दृश्य सज्जा का महत्त्व अनन्य साधारण है किन्तु मंचीयता की दृष्टि से दृश्य शीघ्र परिवर्तनशील, पात्र संचालन में सहाय्यक, पात्रानुकूल होना आवश्यक है। गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित दृश्य सज्जा का विवेचन प्रस्तुत है -

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक के तीनों अंको में दृश्य सज्जा को विभाजित किया हैं। प्रथम अंक में एक घर का बरामदा दिखाया गया है जिसमें एक बड़ी मेज पर कंबल तथा उस पर चादर की तह। दो कमरों के दरवाजे दिखाई देते हैं। घर के अंदर एक ड्राइंगरूम नजर आता है। दिवार पर नेमप्लेट लटकी हुई है जिस पर लिखा है - "इन्द्रराव का घर"[4] द्वितीय अंक में यही दृश्य सज्जा है। तृतीय अंक में इसी दृश्य सज्जा के साथ-साथ केवल एक डायनिंग टेबल को बढाया गया है। देखिए - तृतीय अंक में "इन्द्राराव का घर है, घर के अंदर डाइनिंग टेबल है उस पर नाश्ता लगा है।"[5] स्पष्ट है कि यह नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक कहा जा सकता है

---

1. प्र ना परांजपे - प्रकाश योजना आणि नेपथ्य रचना - पृष्ठ - 69
2. प्रा यशवंत केळकर - सैद्धांतिक स्वरूप - पृष्ठ - 138
3. नेमिशशचंद्र जैन - रंगदर्शन - पृष्ठ - 30
4. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 29
5. वही - - पृष्ठ - 29

क्योंकि किसी भी घर में आसानी से प्राप्त होनेवाले साधन दृश्य सज्जा में है। जो साधन होते हैं वह दृश्य- सज्जा दिखाए गए हैं।

किशोर जी के 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में दृश्य सज्जा को छह दृश्यों में विभाजित किया गया है। प्रथम दृश्य में मंच पर एक व्यक्ति के हाथ में गोमुखा है तथा एक दिवार है जिस पर एक खिड़की है। चतुर्थ दृश्य में धृतराष्ट्र का कक्ष दिखाया है जिसमें कुर्सियाँ हैं। शेष सभी दृश्यों में पहले और चतुर्थ दृश्य में दिखाए मल साधनों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। दृश्य सज्जा में बहुत ही आसान रहनेवाले इस नाटक का मंचन पहला 'दर्पण' कानपुर दवारा 1 फरवरी, 1975 को हुआ।"[1] इस नाटक को मंचन की दृष्टि से सफल करनेवाले व्यक्ति निम्नलिखित है -

"1	निर्देशन, दृश्य-बंध, प्रकाश योजना एवं वेषभूषा - स्वरूप	-	बंसी कौल
2	संगीत	-	ओमप्रकाश अवस्थी
3	रूपसज्जा	-	राधेश्याम दीक्षित (नाटक भारती)
4	वेशभूषा प्रबंध	-	सुबिरा कपूर सुभाषिनी एवं कल्पना प्रसाद
5	मंच व्यवस्थापक	-	सुशील सिन्हा
6	प्रेक्षागृह	-	सुरेश द्विवेदी एवं सहयोगी
7	विज्ञापन - व्यवस्था	-	संतोष श्रीवास्तव : प्रमोद सेठ
8	सामग्री नियोजक		के.बी.सक्सेना एवं कुलदीप सिंह
9	मंच निर्माण		भागवत एवं नंदकिशोर
10	प्रकाश संचालन		पीर गुलाम
11	सहायक		इकबाल एवं हाजी जी"[2]

1. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो' मुख पृष्ठ से उधृत
2. वही -

यह नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल है लेकिन यह नाटक पौराणिक होने के कारण इसमें अधिक पात्रों की आवश्यकता है तथा इस नाटक के लिए अधिक साधनों का इस्तेमाल किया गया है।

किशोर जी के 'घास और घोड़ा' नाटक के तीनों अंको में दृश्य-सज्जा चित्रित है। पहले अंक के पहले दृश्य में मंच पर मेज है उस पर कागज हैं, वह बिखरे हुए हैं। दृश्य दो में मंच पर पं.ख्यालिराम का घर दिखाया गया है घर के अंदर चीड़ की लकड़ी के मेज, दो स्टूल। एक खाट पर मैला सा बिस्तर है, मैलें कपड़ों का ढेर है तथा दो लकड़ी की चौकियाँ है जिनमें से एक का पैया टूटा हुआ है। पाये की जगह ईंटें लगी हुई हैं। दूसरे अंक में मंच पर विमला चक्की पीसती है। अंक दो के तीसरे दृश्य में आदलत का दृश्य है जिसमें जज का एक ऊँचा आसन है, एक मेज है और जिस पर कलम, दवात, पेपरवेट, पिन-कुशन और कागज पत्र हैं। अंक तीन में रंगमंच पर "जज साहब के घर का कमरा। दो-तीन कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। एक तरफ एक दीवान है। मेज है। मेज पर मैला-सा कपड़ा ढ़का हुआ है।"[1] यह नाटक मंचीयता की दृष्टि से इसलिए सफल है कि दृश्य - सज्जा में चित्रित साधन आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं।

किशोर जी के 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में सात दृश्य हैं। दृश्य एक में "एक गोल बड़ी मेज है। मेज के चारों ओर पाँच कुर्सियाँ है।"[2] दवितीय दृश्य में मंच पर वहीं मेज तथा वहीं कुर्सिया हैं। केवल बीच में एक ऊँची कुर्सी रखी है।उसके अतिरिक्त चार कुर्सियों के सामने चार मुखौटें रखें हैं।दृश्य तीन में रंग मंच पर मेज है जिस पर पाँच मुखौटे रखे हैं।दृश्य चार में एक व्यक्ति झाड़ू लगा रहा है।दृश्य पाँच में चार व्यक्ति के चेहरे पर मुखौटे हैं।दृश्य छः में चार व्यक्तियों के हाथ में कुल्हाड़ियाँ हैं।

गिरिराज किशोर ने कम-से-कम साधन को दृश्य सज्जा में रखे हैं। इसलिए नाटक का सफल मंचन किया जा सकता है। स्वयं गिरिराज किशोर इस नाटक

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 183
2. गिरिराज किशोर - 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' - पृष्ठ - 09

के बारे में लिखते है - "मेरे इस नाटक का पहला मंचन दिल्ली की संस्था 'शून्य' दवारा किया गया था। दूसरा मंचन संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के सभागार में किया गया था।"[1] अत: स्पष्ट होता है कि मंचीयता की दृष्टि से यह नाटक सफल है।

गिरिराज किशोर के 'केवल मेरा नाम लो' नाटक में छ: अंक है। प्रथम अंक में मंच पर "एक कमरा है उसके सामने बरमदा है, बरामदे पर एक छोटासा ड्राईंग रूम है।"[1] अंक दो में रजनीकान्त का घर है, सामने दो कमरे हैं। ड्राईग रूम. दूसरा बेडरूम कम स्टडी रूम, ड्राईग रूम में फोन है। अंक तीन, चार, और पाँच में वही दृश्य सज्जा है। अंक छ: में सुलभा का कमरा है कमरें में कपड़े अस्त व्यस्त पड़े हैं। मंचीयता की दृष्टि से यह नाटक सफल कहा जा सकता है क्योंकि मात्र कुछ साधनों को रख खुद अंक में चित्रित कमरें को छह अलग-अलग दृश्यों में दिखा सकते हैं।

गिरिराज किशोर के 'जुर्म आयद' नाटक के प्रथम अंक मे मंच पर "पुलिस थाना दिखाया है। जिस पर लिखा हैं 'थाना शहीद सुखदेव नगर"[2] दिवतीय अंक में अदालत का कमरा दिखाया है। तृतीय अंक जस्टिश शिवचरण के घर का कमरा दिखाई देता है, उसमें एक मेज है जिस पर किताबें हैं, पास में एक टेबल-लैंप जल रहा है तथा एक फोन है। गिरिराज किशोर ने दृश्य-सज्जा में कुछ ही साधनों का उपयोग किया है। यह नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल बन पड़ा है।

'काठ की तोप' नाटक में तीन अंक है। प्रथम अंक में तीन दृश्य, दवितीय अंक में पाँच तथा तीसरे अंक में तीन दृश्य हैं। दृश्य-सज्जा के साधन ने नाटक को सफल बनाने में मदद की है। प्रथम अंक में मंच पर अर्ध गाँव का सेट है। दवितीय अंक के प्रथम दृश्य में मंच पर जूते पड़े हैं, तो कहीं फटे कपड़े पड़े है। तीसरे अंक के दृश्य एक में मंच पर एक बड़ा आधुनिक ढंग से सजा हुआ कमरा है। उसमें सिर्फ एक ही पलंग है, पलंग पर बिस्तर है। दृश्य सज्जा की आसानी के कारण

---

1. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो' मुखपृष्ठ से उधृत
2. गिरिराज किशोर - केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 243
3. गिरिराज किशोर - 'जुर्म जायद' - पृष्ठ - 1

प्रस्तुत नाटक के अब तक पाँच प्रदर्शन हो गए हैं। वे इस तरह हैं -

1. दिनांक 6 नवंबर, 1995, केंद्रीय कारागृह, उदयपुर।

2. दिनांक 15 नवबंर, 1995, लोक कला मण्डल उदयपुर।

(भाषायी नाट्य समारोह के अन्तर्गत)

3. दिनांक 17 दिसंबर, 1996, अखिल भारतीय नाट्य उत्सव, जयपुर।

4. दिनांक 19 दिसंबर, 1996,

प्रस्तुत मंचन अखिल भारतीय नाट्य उत्सव, जोधपुर, अखिल भारतीय नाट्य उत्सव, मध्य सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला, पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वधान में आयोजित किया गया।

5. दिनांक 26 दिसंबर, 1996, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली एवं पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर द्वारा आयोजित सधन नाट्य प्रशिक्षण शिबिर के उद्घाटन अवसर पर शिल्पग्राम उदयपुर।

अत: स्पष्ट है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने कम-से-कम दृश्य साधनों में ज्यादा से ज्यादा समस्याएँ प्रस्तुत की है।इसलिए उनके सभी नाटकों का मंचन हुआ है।

5.3 अभिनय :

अभिनय की नींव पर नाटक का मंचन निर्भर होता है। नाटककार के विचार पात्रों के अभिनय से स्पष्ट होते हैं। अभिनय में संवाद-योजना और पात्र-योजना का होना आवश्यक होता है। संवाद योजना में जितनी प्रभावोत्पादकता हो नाटक उतना ही प्रभावोत्पादक बनता है। गिरिराज किशोर के नाटकों में मानवीय जीवन की यथार्थता को अभिनय के माध्यम से सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया गया है। उनके नाटकों में संवाद-योजना तथा पात्र-योजना में अकृत्रिमता, स्वाभाविकता, बोधगम्यता दृष्टिगोचर होती है। नाटक में अभिनय प्राण तत्व होता है। किशोर जी के नाटकों में अभिनय

के चारों (अंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य) अंग दृष्टिगोचर होते हैं। निम्नलिखित अभिनय तत्त्व आते हैं।

अंगिक अभिनय :

'नरमेध' नाटक में अभिनय की दृष्टि से अंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य तत्त्वों के अनुरूप संवाद-योजना तथा पात्र योजना है।

नाटक में कुलमिलाकर सात पात्र है। तारा मुख्य नायिका है। वह परिवार से पीड़ित है। प्रस्तुत कथन देखिए - "मैं सोचती कहाँ हूँ, भोगती हूँ।"[1] बाकी के पात्र गौण है। फिर भी अभिनय की दृष्टि से पात्र-योजना योग्य है।

इस नाटक में अंगिक अभिनय के लिए संवाद इस तरह प्रस्तुत हैं - "माँ के आने तक मैं इस साड़ी पर प्रेस कर डालूँगा। उन्हें यह बहुत पसंद है। (वह साडी फैलाकर प्रेस करने लगता है।)"[2]

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में कुल 14 पात्र हैं। इस नाटक का मुख्य नायक धृतराष्ट्र है और मुख्य नायिका के रूप में गांधारी है। बाकी गौण पात्र हैं। इस नाटक की पात्र-योजना के कारण यह नाटक सफल हुआ है।धृतराष्ट्र एक अंधा राजा होकर राजनीतिक खेल खेलने के लिए कौरवों को आदेश देता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मेरे ही आदेश से जुआ खेला गया था।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि धृतराष्ट्र गंदी राजनीति करनेवाला राजा है। गांधारी इस नाटक की नायिका है। लेकिन वह नारी होकर भी अपने बेटे को कुटनीति के मार्ग पर ले चलती है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "जाओ सुयोधन नये युग के लिए नई नीति का निर्माण करो।"[4] अनेक दृश्यों को प्रस्तुत करने के कारण इस नाटक में अंगिक अभिनय के लिए अभिनेताओं को अनेक मौंके

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 43
2. वही - - पृष्ठ - 32
3. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो' - पृष्ठ - 63
4. वही - पृष्ठ - 30

प्राप्त हुए हैं। देखिए - प्रहरी घूमते नजर आते हैं।"[1]

'घास और घोड़ा' नाटक में कुल पात्रों की संख्या **20** है। इस नाटक में नाटकार ने मंचीयता की दृष्टि से निर्देशक के लिए नाटक के आरंभ तथा बीच-बीच में भी निर्देश दिए हैं, जिससे कोई भी निर्देशक नाटक का सफलता से मंचन कर सकता है। नाटक में पात्रों को दोहरी-तिहरी भूमिकाओं की सुविधा उपलब्ध कर कम-से-कम पात्रों की सहायता से नाटक को सफलता से प्रस्तुत किए जाने की सुविधा लेखक ने की है। इस नाटक का नायक पण्डित ख्यालिराम है जो आर्थिक समस्या से घिरा हुआ है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "पण्डित जी की बेटी से सम्बन्ध होते ही काल कट जाएगा साक्षात् लक्ष्मी है... राज करोगी।"[2] इस नाटक की नायिका विमला है। वह शादी शुदा होकर भी प्रधान के बेटे के साथ नाजायज संबंध रखती है। प्रस्तुत कथन देखिए - "विमला मुँह में आँचल ठूँस लेती है।"[3] इससे स्पष्ट होता है विमला बदचलन नारी हैं और बदचलन नारी के पात्र को प्रस्तुत करने के लिए अंगिक अभिनय महत्त्वपूर्ण होता है।

किशोर जी के 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक में कुल **5** पात्र हैं। इस नाटक का मुख्य नायक महान चेहरा है। वह गरीबों के प्रति सहानुभूति दिखाता है। प्रस्तुत संवाद देखिए -"उनकी गरीबी हमारी दुश्मन है।"[4] इससे स्पष्ट होता है महान् चेहरा राजनीतिक व्यक्ति है। इस नाटक में अंगिक अभिनय में संवाद इस तरह प्रस्तुत है - " दौंड़कर चौथे के पास जाता है।"[5]

किशोर जी के 'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में **14** पात्र हैं। इस नाटक का प्रमुख पात्र रजनीकान्त है। वह मानसिक पीडा से त्रस्त है। देखिए -"कंधा चढाकर छोड़ देता है। उस आदमी के सामने जा खड़ा होता है।"[6] रजनीकान्त मानसिक पीड़ा से

---

1. गिरिराज किशोर	-	'प्रजा ही रहने दो'	-	पृष्ठ - 17
2. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' घास और घोड़ा'	-	पृष्ठ - 147
3. वही	-		-	पृष्ठ - 180
4. गिरिराज किशोर	-	चेहरे-चेहरे किसके चेहरे	-	पृष्ठ - 16
5. वही	-		-	पृष्ठ - 68
6. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो	-	पृष्ठ - 245

त्रस्त व्यक्ति का अंगिक अभिनय करता है। प्रस्तुत नाटक की नायिका सुलभा है। वह अपने पिता का अन्याय सहती रहती है। देखिए- "मार लीजिए...जी भरकर मार लीजिए पापा। मैं आपकी बेटी हूँ... बेटी ही रहूँगी।"[1] अत: यहाँ अंगिक अभिनय स्पष्ट होता है।

किशोर जी के 'जुर्म आयद' नाटक में कुल पात्रों की संख्या **26** है। इस नाटक का नायक न्यायाधिश शिवचरण है। वह कानून कार्य करनेवाला व्यक्ति है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "हम कागज हैं, टाइपरायटर हैं, कलम हैं और केवल दस्तखत है।"[2] यहाँ शिवचरण की छटपटाहट का अंगिक अभिनय स्पष्ट होता है। इस नाटक की नायिका उम्मेदी है। वह कानून के दरोगा से पीड़ित है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मेरी छोरी चली गयी। तू रसीया बनके आया है।"[3] अंगिक अभिनय इस तरह प्रस्तुत है देखिए - "वह हाथ पकड़कर खींचता है। उम्मेदी हाथ झटकर दूसरी तरफ सरक जाती है।"[4] यहाँ अंगिक अभिनय के माध्यम से उम्मेदी की पीड़ा स्पष्ट होती है।

अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक अंगिक अभिनय में सफल हुआ है।

गिरिराज किशोर 'काठ की तोप' इस नाटक में कुल पात्रों की संख्या **13** है। इस नाटक के नायक बड़े नवाब तथा छोटे नवाब है। दोनों भी स्वार्थी है। प्रस्तुत संवाद देखिए -

"कोई भाई रहा न यार रहा
सबको स्वारथ मार रहा।"[5]

इससे स्पष्ट होता है कि दोनों नवाब स्वार्थी है। प्रस्तुत नाटक में प्रस्तुत अंगिक अभिनय देखिए "मटरूमल थूक लगा-लगाकर वर्क पर वर्क पलटता है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - **284**
2. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - **57**
3. वही - - पृष्ठ - **14**
4. वही - - पृष्ठ - **14**
5. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - **12**

उंगलियों पर हिसाब जोड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि अंगिक अभिनय की दृष्टि से नाटक सफल हुआ है।

वाचिक अभिनय :

अभिनय का यह दूसरा तत्त्व है गिरिराज किशोर के सभी नाटकों में वाचिक अभिनय सशक्त मात्रा में दिखाई देता है।

'नरमेध' नाटक के वाचिक अभिनय में करुण रस दिखाई देता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "सब जानती हूँ। तुम सब मेरे वजन से दब गए हो।"[1]

"प्रजा ही रहने दो' इस नाटक के वाचिक अभिनय में जादातर संवादों में करुण रस दिखाई देता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "अब न बेटी हूँ, न बहू। केवल पांचाली मैं सबकी अपराधिनी हूँ।"[2]

'घास और घोड़ा' नाटक में शृंगार रस दिखाई देता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - "अपने लिए एक औरत ले आओ पराए मर्द की औरत के सहारे कब तक रहोगे।"[3]

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' इस नाटक में करुण रस स्पष्ट होता है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "काटता हूँ तो जीव कटता है। नहीं काटता तो तन...।"[4]

'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में करुण रस स्पष्ट होता हैं। प्रस्तुत संवाद देखिए - "मार लीजिए..... जी भरकर मार लीजिए पापा। मैं आपकी बेटी हूँ... बेटी ही रहूँगी।"[5] 'जुर्म आयद' नाटक में शृगांर रस को स्पष्ट किया है। प्रस्तुत संवाद दृष्टव्य है - "अच्छी है। अलबत्ता नखरैल मालूम पड़ती है। खुश-शक्ल औरतें हो जाती हैं। क्यों?"[6]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 34
2. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो' - पृष्ठ - 109
3. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 163
4. गिरिराज किशोर - चेहरे-चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 67
5. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 285
6. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 11

'काठ की तोप' इस नाटक में वीर रस दिखाई देता है। प्रस्तुत संवाद देखिए - " मैं इस पर सब-कुछ कुर्बान कर दूँगा - कमबक्तों ने इसे कितना जख्मी कर डाला।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि सभी नाटकों में वाचिक अभिनय सशक्त मात्रा में है।

सात्विक अभिनय :

नरमेध नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं - "हँसती है और हँसती जाती है।"[2]

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में सात्विक अभिनय इस तह प्रस्तुत है - "धृतराष्ट्र एक लंबी सांस लेकर छोड़ देता है।"[3]

'घास और घोड़ा' नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं - "गुस्से में होंठ काँपने लगते हैं।"[4]

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं- साँस फूल आता है। खाँसने लगते रूक जाते हैं।"[5]

'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं - "रजनीकान्त उसकी तरफ गौर से देखता है।"[6]

'जुर्म आयद' नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं - "औरत उसकी तरफ घृणा से देखती है।"[7]

'काठ की तोप' इस नाटक में सात्विक अभिनय इस तरह प्रस्तुत हैं - "बड़े नवाब सवालिया नजर से देखते हैं।"[8]

---

1. गिरिराज किशोर	-	काठ की तोप	-	पृष्ठ - 23
2. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' नरमेध	-	पृष्ठ - 41
3. गिरिराज किशोर	-	प्रजा ही रहने दो	-	पृष्ठ - 66
4. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' घास और घोड़ा	-	पृष्ठ - 159
5. गिरिराज किशोर	-	चेहरे-चेहरे किसके चेहरे	-	पृष्ठ - 71
6. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो	-	पृष्ठ - 251
7. गिरिराज किशोर	-	जुर्म आयद	-	पृष्ठ - 6
8. गिरिराज किशोर	-	काठ की तोप	-	पृष्ठ - 8

आहार्य अभिनय :

आहार्य अभिनय नाटक का महत्त्वपूर्ण अंग होता है जिसमें वेशभूषा प्रमुख रहती है। वेशभूषा के अभाव से नाटक असफल हो सकता है। अभिनय को प्रभावी बनाने के लिए वेशभूषा भौगोलिक, धार्मिक, सामाजिक, प्रादेशिक तथा ऐतिहासिक परिस्थिति के अनुकूल होना आवश्यक है। पात्र को वास्तव रूप देने का काम वेशभूषा करती है। वेशभूषा में वेशभूषाकार एवं निर्देशक का कौशल्य अधिक रहता है। डॉ.अज्ञात के अनुसार - "वस्त्रों से न केवल शुभा-शुभ, सुख-दु:ख तथा जय-पराजय का बोध होता है। वनपृथक विचारों, मतमतान्तरों का भी बोध होता है।"[1] इसी संदर्भ में डॉ.विश्वभावन देवालिया लिखते हैं - "प्रभावकारी रूपसज्जता ही किसी चरित्र के अभिनय और भाव-प्रदर्शन को संपूर्णता प्रदान करती है।"[2] निष्कर्षत: स्पष्ट है कि वेशभूषा नाटक की सफलता में महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। नाटककार गिरिराज किशोर के नाटकों में वेशभूषा का ख्याल विशेष रूप से रखा गया है। यहाँ हम उनके नाटकों की वेशभूषा का विवेचन करेंगे 'नरमेध' इस मंचीत नाटक में रंजन की प्रेमिका वंती न मिलने के कारण रंजन की हालत बिगड़ गई है इसका चित्रण इस तरह किया गया है। "रंजन मंच पर आता है। कपड़े फटे है। दाढ़ी बढ़ी है। जगह-जगह से खुन निकल रहा है।"[3] अत: स्पष्ट होता है कि वेशभूषा के कारण ही नाटक सफल हो जाता है।

'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक पौराणिक होने के कारण पूर्णत: वेशभूषा पर ही आधारित है। इस नाटक के पात्र वेशभूषा से ही पहचाने जाते हैं। सुयोधन को युद्ध में विजयी बनाने के लिए गांधारी सुयोधन को वज्र का बनाती है। देखिए - "सुयोधन चुपचाप सिर झुकाए खड़ा रहता है। गांधारी धीरे-धीरे नेत्रों पर से पट्टी उतार देती है।"[4] इस नाटक का विषय पौराणिक होने के कारण इस नाटक की सफलता

---

1. डॉ.अज्ञात - 'रंगमंच सिद्धान्त एवं व्यवहार' - पृष्ठ - 146
2. डॉ.विश्वभावन देवलिया - नाट्य प्रस्तुति स्वरूप और प्रकिया - पृष्ठ - 224
3. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 60
4. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 79

वेशभूषा पर ही आधारित है। अत: आहार्य अभिनय की दृष्टि से यह नाटक सफल है।

किशोर जी का 'घास और घोड़ा' नाटक मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित है। इस नाटक में विमला के भाई को रामनिरख के कत्ल में फँसाकर गिरफ्तार किया जाता है। गिरिराज किशोर ने इस नाटक में पात्रों की वेशभूषा का चित्रण इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है - "एक-सी सफेद ड्रेस पहने नए लगने वाले अनेक रंगकर्मी मंच पर आकर खड़े हो जाते है।"[1] अत: किशोर जी का प्रस्तुत नाटक वेशभूषा की दृष्टि से सफल हुआ है।

किशोर जी का 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' यह नाटक राजनीतिक सत्ताधारी नेताओं पर आधारित है। किशोर जी ने राजनीतिक समस्या तथा भ्रष्टाचार को स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं - "चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' के निर्देशकों और पर्यवेक्षकों का मैं आभारी हूँ कि उन्होंने इसके अटपटे और चुटीलेपन के बावजूद इसका मंचन किया और इसे देखा।"[2] किशोर जी ने पात्रों की वेशभूषा का चित्रण इस तरह से किया है - "पाँचवा साधारण वेश-भूषा में एक बड़ा मूखौटा लगाये है।"[3] नाटककार ने मध्यवर्गीय लोगों की वेशभूषा को अपनाकर मंचीयता की दृष्टि से नाटक को सफल बनाया है।

'केवल मेरा नाम लो' मध्यवर्गीय जीवन पर आधारीत नाटक है। प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्र रजनीकान्त की वेशभूषा का चित्रण किशोर जी ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है - "प्रवेश दवार के सामने, बरामदा के पास फटी, पुरानी, मैली-कुचैली पैंट, बुशर्ट पहने, एक अधेड़ किस्म का व्यक्ति अर्ध विक्षिप्त अवस्था में खड़ा, बंद दरवाजे की तरफ एकटक देख रहा है।"[4] अत: स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक में भी आसानी से उपलब्ध होनेवाली वेशभूषा है।

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 140
2. गिरिराज किशोर - चेहरे चेहरे किसके चेहरे मुखपृष्ठ से उधृत
3. वही - - पृष्ठ - 14
4. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 245

'जुर्म आयद' नाटक भ्रष्ट कानून व्यवस्था, समाज व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करता है। न्यायाधीश शिवचरण को उम्मेदी के आने का भास होता है। उम्मेदी की वेशभूषा का किशोर जी ने चित्रण किया है। इस तरह - "दरवाजा अपने आप खुल जाता है। अधेड़ लगनेवाली-उम्मेदी जेल की ड्रेस में दाखिल होती है।"[1]

'काठ की तोप' नाटक राजनीतिक है। नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटक के माध्यम से भ्रष्ट राजव्यवस्था तथा चापलुसी करनेवालों पर कड़ा प्रहार किया है। लढ़ाई करने के कारण बड़े नवाब और छोटे नवाब की वेशभूषा का चित्रण इस प्रकार से किया गया है - "सब कुछ बिखरा हुआ। कपड़े फटे हुए है। नवाबों से लेकर दरबारियों तक शिकस्ता हालत में हैं।"[2] छोटे नवाब तथा बड़े नवाब की वेशभूषा पठानी है। अत: प्रस्तुत वेशभूषा यह नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक है।

5.5 प्रकाश - योजना :

नाटक के मंचन के लिए प्रकाश योजना अनन्य साधारण महत्त्व रखती है। नाटककार गिरिराज किशोर ने नाटकों की रचना करते समय प्रकाश योजना को उचित स्थान दिया है। प्रकाश के बिना नाटक या अभिनय में जान नहीं रहती। विश्वभावन देवालिया के अनुसार - "वैज्ञानिक प्रगति के साथ ही आधुनिक विदयुत यंत्रों के अविष्कारों से प्रकाश को नाट्य में नियंत्रीतता, नियोजीत, केंद्रीय और प्रवाहित करने की विविध विशिष्ट विधियों ने नाट्य अभिनय के प्रभाव तथा उसके माध्यम गति एवं कार्य व्यापार को संतुलित एवं व्यंजित करने में अभूतपूर्ण योगदान प्रदान किया है।"[3] अत: स्पष्ट है कि नाटक के मंचन में प्रकाश योजना का महत्त्व अनन्य साधारण है। गिरिराज किशोर के नाटकों में प्रकाश-योजना की खास विशेषता स्पष्ट होती है। यहाँ हम किशोर जी के नाटकों की प्रकाश योजना का विवेचन करेंगे।

---

1. गिरिराज किशोर	-	जुर्म आयद	-	पृष्ठ - 53
2. गिरिराज किशोर	-	'काठ की तोप'	-	पृष्ठ - 38
3. डॉ.विश्वभावन देवलिया	-	नाट्य प्रस्तुतिकरण स्वरूप और प्रकिया	-	पृष्ठ - 38

'नरमेध' नाटक में गिरिराज किशोर ने प्रकाश-योजना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। नाटक के आरंभ में प्रकाश-योजना के संदर्भ में लेखक लिखते हैं - "मंच पर मद्धम रोशनी है। रोशनी धीरे-धीरे बढ़ती है।"[1] द्वितीय अंक में पारिवारिक वातावरण की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए नाटककार ने प्रकाश योजना इस तरह से प्रस्तुत की है - "रोशनी धीरे-धीरे बंद हो जाती है। मंच पर अंधेरा है। बैड़रूम से नीली रोशनी आ रही है। तारा पर रोशनी पड़ती है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि प्रकाश योजना बिगड़ते पारिवारिक स्थिति को स्पष्ट करती है।

'प्रजा ही रहने दो' नाटक में रंगमंच को दो भागों में विभाजित कर एक भाग में कुंती तथा गांधारी के राजभवन को प्रकाश के आधार पर दिखाया गया है। देखिए - "मंच के पहले भाग में एक ओर धृतराष्ट्र, गांधारी और सुयोधन बातें करते हैं तो दूसरी ओर कुंती, विदूर और युधिष्ठिर बातें करते हैं। बीच-बीच में प्रहरीयों की बातें सुनाई पड़ती है। मंच के दूसरे भाग में अंधकार हो जाता है और इसी प्रकार जब धृतराष्ट्र गांधारी और सुयोधन बाते करते हैं, तो शेष भागों में अंधकार हो जाता है। अर्थात जब मंच के एक भाग के पात्र बोलते हैं तो शेष दो भाग शांत रहते हैं।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि केवल प्रकाश के आधार पर ही मंच को विभाजित किया गया है। अत: प्रस्तुत नाटक में प्रकाश योजना महत्त्वपूर्ण है।

'घास और घोड़ा' नाटक में प्रकाश-योजना का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत नाटक में प्रकाश-योजना का उपयोग इस तरह किया गया है - "कोर्ट में सन्नाटा हो जाता है। मंच पर भी रोशनी मद्धम पड़ने लगी है। जज के पाँव स्थिर होने लगते हैं। आदालत का काम रूक जाता है। थोड़ी देर बाद फिर रोशनी बढ़ती है। रोशनी बढ़ने के साथ-साथ पाँव को हिलने की गति बढ़ती जाती है।"[4]

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' नरमेध - पृष्ठ - 29
2. वही - पृष्ठ - 29
3. गिरिराज किशोर - प्रजा ही रहने दो - पृष्ठ - 12
4. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' घास और घोड़ा - पृष्ठ - 176

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में गिरिराज किशोर ने प्रकाश-योजना का उपयोग दिन-रात दिखाने के लिए किया है। देखिए - "मंच पर रोशनी होती है, पहले से अधिक सँवेरा हुआ कमरा, वही मेज और वही कुर्सियाँ।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि प्रकाश के माध्यम से दिन और रात का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में प्रस्तुत प्रकाश-योजना इस तरह है-"रात का गहरा अँधेरा।"[2] स्पष्ट है कि प्रकाश-योजना के माध्यम से वातावरण निर्मिति की गई है।

'जुर्म आयद' नाटक को महत्त्वपूर्ण बनाने में प्रकाश-योजना का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। नाटक में दिन-रात तथा गंभीर वातावरण निर्माण करने के लिए प्रकाश-योजना का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत इस नाटक में भी प्रकाश-योजना का उपयोग इस तरह किया गया है - "सब लोग हंस पड़ते हैं। सिपाही डंड़ा उठाकर दौड़ता है। चारों तरफ अंधेरा होता है। रोशनी का चकता उसके साथ-साथ घूमता रहता है।"[3]

'काठ की तोप' नाटक में प्रकाश-योजना के आधार पर एक ही मंच को दो विभागों में विभाजित किया गया है। उसमें एक बड़े नवाब का दरबार तथा छोटे नवाब का दरबार प्रकाश योजना के आधार पर दिखाया गया है - "रोशनी मद्धम पड़ती है। दोनों तरफ मुसहिब और दरबारी आना शुरू कर देते हैं। फर्राश पीछे जाकर हाथ बांधकर खड़े हो जाते हैं।"[4] इससे स्पष्ट होता है कि प्रकाश-योजना का उपयोग प्रस्तुत नाटक में सफलता से किया गया है।

5.6 ध्वनि संकेत :

नाटक में ध्वनि संकेत को अनन्य साधारण महत्त्व है। सशक्त अभिनय के लिए महत्त्वपूर्ण अंग ध्वनि संकेत होता है। नाटक का वातावरण स्पष्ट करने के लिए

---

1. गिरिराज किशोर - चेहरे चेहरे किसके चेहरे - पृष्ठ - 13
2. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 275
3. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 06
4. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 07

ध्वनि संकेत की आवश्यकता होती है। मोहन राकेश के अनुसार - "रंगमंच में दृश्य की अपेक्षित स्थिरता के बावजूद जो एक आंतरिक गति रहती है। वह शब्दों और ध्वनियों की निरंतरता से ही उपजती है।"[1] अत: स्पष्ट है कि रंगमंच में ध्वनि-योजना का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। किशोर जी के नाटकों में उचित स्थान पर ध्वनि-संकेत के निर्देश मिलते हैं।

'नरमेध' नाटक में नाटककार ने ध्वनि-संकेत के निर्देश इस तरह दिए हैं - "हल्की सी शिथिल आवाज सुनाई पड़ती है। वह रूककर इधर-उधर देखता है। आवाज दुबारा सुनाई पड़ती है। वह कान लगाकर सुनता है।"[2] स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक में ध्वनि संकेत के वातावरण निर्मिति में सहायक है।

'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक पौराणिक है। इस नाटक में नाटककार किशोर जी ने ध्वनि को इस तरह प्रस्तुत किया है - "संस्कृति के श्लोक की बहुत मद्धम आवाज और वाद्य सुनई पड़ते है।"[3] अत: स्पष्ट है कि नाटक की पौराणिकता ध्वनि संकेत के कारण स्पष्ट होती है।

'घास और घोड़ा' नाटक में नाटककार ने ध्वनि संकेत इस तरह दिए है - "सोटे की घुँघरू पहले से हलके बजते रहते हैं।"[4]

'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' नाटक में ध्वनि का स्थान महत्त्वपूर्ण है। नाटक की स्थिति संकेत से ही स्पष्ट हो जाती है। देखिए - "हवाई जहाज की घुँ-घुँ मोटार, टांगे, टमटम, रेल की सीटी, सायरन गड्ड-मड्ड आवाजें सुनाई पड़ती हैं।"[5] अत: स्पष्ट है कि रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए कठिन होनेवाले तथ्य मात्र ध्वनि की सहायता से स्पष्ट की जा सकती है।

---

1 मोहन राकेश	-	साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि	-	पृष्ठ - 91
2. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' नरमेध	-	पृष्ठ - 31
3. गिरिराज किशोर	-	प्रजा ही रहने दो	-	पृष्ठ - 01
4. गिरिराज किशोर	-	'रंगार्पण' घास और घोड़ा	-	पृष्ठ - 145
5. गिरिराज किशोर	-	चेहरे चेहरे किसके चेहरे	-	पृष्ठ - 09

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में सिर्फ कोड़ों की आवाज के लिए ही ध्वनि का प्रयोग किया गया है। देखिए - "कोड़ों की आवाज सुनाई पड़ती है। हर कोड़े की आवाज के साथ मंच भी थरथरा जाता है।"[1] अत: स्पष्ट है कि नाटक में गंभीरता लाने के लिए ध्वनि का उपयोग किया गया है।

'जुर्म आयद' नाटक को रोचक बनाने के लिए ध्वनि का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। नाटककार कथानक के कुछ तथ्यों को ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत करता है। तब दर्शकों को नाटक की स्थिति का पता चल जाता है। प्रस्तुत नाटक का ध्वनि संकेत देखिए - "पार्श्व संगीत सुनाई पड़ता है। मद्धिम और गमगीन।"[1] इससे स्पष्ट होता है - ध्वनि संकेत की सहायता से यह नाटक सफल हुआ है।

'काठ की तोप' नाटक में सिर्फ ढोल बजाने की आवाज आती रहती है। देखिए - "मंच पर ढम-ढ़म-ढोल या नक्कारा बजने की आवाज आती है।"[2] अत: स्पष्ट है नाटक में ध्वनि आवश्यक है। इसलिए किशोर जी के नाटकों में ध्वनि संकेत को उचित जगह पर निर्देशित किया गया है।

निष्कर्ष :

साहित्यिक विधाओं में नाटक विधा एक सक्षम विधा है। नाटक के शिल्प में मंचीयता एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व की भाँति दैदिप्यमान है। गिरिराज किशोर ने समाज की यथार्थता का अवलोकन कर के नाटक के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। 'मंचीयता' नाटक का एक ऐसा पहलू है जो नाटक में सजीवता लाकर कथ्य को स्पष्ट करती है। इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि 'नरमेध', 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे', 'केवल मेरा नाम लो', 'जुर्म आयद' और 'काठ की तोप' किशोर जी के प्रस्तुत

---

1. गिरिराज किशोर - 'रंगार्पण' केवल मेरा नाम लो - पृष्ठ - 284
2. गिरिराज किशोर - जुर्म आयद - पृष्ठ - 38
3. गिरिराज किशोर - काठ की तोप - पृष्ठ - 02

नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक हैं।

'नरमेध' और 'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में संगीत-योजना कम है। 'दृश्य सज्जा' से स्पष्ट होता है कि किशोर जी के नाटकों में कामचलाऊँ दृश्य साधन हैं जो कहीं से भी आसानी से प्राप्त हो सकते हैं।

'अभिनय' से स्पष्ट होता है कि सभी नाटक अभिनय की दृष्टि से योग्य हैं। उसमें संवाद-योजना, पात्र-योजना तथा अभिनय (अंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य) की दृष्टि से सफल हुए हैं।

'वेशभूषा' से स्पष्ट होता है कि 'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक पौराणिक होने के कारण इस नाटक की सफलता वेशभूषा पर ही आधारित है। सभी नाटकों में वेशभूषा पात्रानुकूल है। प्रकाश-योजना से स्पष्ट होता है कि किशोर जी ने प्रकाश योजना के माध्यम से नाटक में वातावरण निर्मिति की है। 'ध्वनि संकेत' से स्पष्ट होता है कि किशोर जी के नाटकों में ध्वनि संकेत का ज्यादा उपयोग 'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में हुआ है।

संक्षेप में कहा जाता है कि किशोर जी के नाटक मंचीयता की दृष्टि से पूर्णत: सफल हैं।